International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)

संस्कृत वाङ्मय में अभिज्ञान शाकुन्तलम् में निहित सामाजिक जीवन दर्शन

डॉ0 मंजु लता
रीडर संस्कृत,
राजकीय महिला महाविद्यालय,
बिन्दकी,फतेहपुर, उत्तर प्रदेश।

Article Info
September-October-2012
Page Number : 335-337

Publication Issue :
September-October-2012

Article History
Accepted : 01 Sep 2012
Published : 28 Sep 2012

सर्व प्रथम महाकवि कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम नाटक के शीर्षक में ही एक दर्शन छिपा है। अभिज्ञान और शाकुन्तलम् अन्तिम शब्द नाटक की नायिका का नाम पर आधारित है। अभिज्ञान शब्द का अर्थ है पहिचान हेतु यह अभिज्ञान बड़ा ही गूढ़ अर्थो वाला है। इसका सम्पूर्ण नाटक की चरम परिणति पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। कण्वऋषि के आश्रम के पवित्र परिवेश में दुष्यन्त एवं शकुन्तला का प्रेम सामाजिक एवं पाठकों की दृष्टि से नैतिकता से रहित था क्योंकि गुरूजनों की अनुमति के बिना ही यह प्रेम अंकुरित होता है। अतः भारतीय संस्कारो से युक्त कवि का हृदय ऐसे प्रेम को दण्डनीय समझता है इसी दण्ड के लिए दुर्वासा ऋषि से श्राप का विधान किया गया है। लेकिन नाटक के दोनों पात्रों का एकान्तिक प्रेम दृढ़ पवित्र एवं सहज है। दोनों की प्रेम भावना उनके हृदय में अमिटछाप छोड़ चुकी है। कवि इस जीवन दर्शन से परिचित है इनका प्रेम पवित्र है अतः इनका जीवन सुखान्त होना ही चाहिए इसलिए अभिज्ञान का सहारा लेकर दण्ड का प्रतिकार किया है इससे कवि ने सामाजिक व्यवहार अनुसार नाटक को सुखान्त बना दिया। दूसरा प्रश्न उठता है कि कालिदास का साहित्य विश्व का अन्यतम् साहित्य है उसमें से अभिज्ञान शाकुन्तलम् अद्वितीय कृति है इसमें एक–एक वाक्य में सामाजिकता का दर्शन हमें देखने को मिलता ही है साथ ही काव्य के दर्शन का भी अवलोकन होता है। जैसे –''अयेलब्ध नेत्रनिर्वाणम्'' अहों मेरे नेत्र को तो मोक्षतुल्य परमानन्द, जो जीवन का परमपुरूषार्थ है प्राप्त हो गया, सब कुछ जो भी देखने योग्य था, पा लिया अर्थात संक्षिप्त वाक्य में अपार भवसागर पार उतरने की शक्ति है यही तो कवि का दर्शन है।

दुष्यन्त द्वारा चित्र मिटाकर फिर से बना दिया है फिर भी सौदर्य की रेखायें नहीं पूर्ण हो सकी जिस्मीय सौंदर्य का अनुभव मनुष्य चराचर जगत् के एकाकार होकर कर सकता है। इसी चित्र को समग्र बनाने के लिए दुष्यन्त की परिक्लपना है –

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

कार्या सैकतलोनहं समियुना स्रोतो वहामालिनी
पदाास्तामभितो निषण्णहरिणा गौरीगुरोः पावनाः।।

अभी इसमें वह मालिनी नदी बनानी है जिसके रेतीले तट पर हंसो के जोडे दुबके हो। उसके आस पास पार्वती के पिता हिमालय की पावन ढलाने बनानी है। एक ऐसा पेड़ जिनकी डालों पर मुनियों के वल्कल सूखने को लटकायें गये हो उसके नीचे मैं अपने सींग से कृष्णमृग की बायीं आंख खुजाती हिरणी को बनाना चाहता हूँ प्रेम की इस तल्लीनता और सृष्टि के कण कण के साथ एकाकार होने में ही सच्चे सौन्दर्य के दर्शन होते है। ऐसे सौन्दर्य को महाकवि ने अपनी रचनाओं में सजीव बना दिया कालिदास की दृष्टि में राजा होने का अर्थ भोग–विलास में लिप्त होना नहीं है वास्तव में तो राज्य करना सुख का उपभोग करने के लिए नहीं बल्कि कष्ट उठाने के लिए होता है।

कालिदास ने भोगवाद की सामंतीय मनोवृत्ति का दृढ़ खण्डन किया है पर उन्होंने शरीर को निरर्थक कष्ट देने वाले तप का भी पक्ष नहीं लिया है उनके आदर्श ऋषि कण्व और कश्यप है न कि दुर्वासा।

क्योंकि कल्प वृक्ष के वन में प्राणों की वृत्ति ये केवल हवा मे चला रहे है स्वर्ण कमल के पराग के पिंगल वर्ण वाले जल में ये धर्म पूर्वक अभिषेक की क्रिया करते है अप्सराओं के सानिध्य में संयम रखते है। अन्य मुनि तपस्या के द्वारा जो चाहते है ये उनके बीच में रहकर तप कर रहे है। इन्होने अभिज्ञान शाकुन्तलम् में आश्रमों की संस्कृति का **यशोगान** किया है। नगरों की भौतिकता विलासिता व सामान्तीय समाज की अपरिग्रह स्वालम्वन तेजस्विता का महत्व दिया है जब विदूषक हंसी–हंसी में दुष्यन्त से आश्रम के मुनियों से कर वसूलने की बात करते है तो राजा तुरन्त झिड़क कर कहते है। राजा को अन्य लोगों से जो धन के रूप में शुल्क मिलता है वह तो नष्ट हो जाता है मुनीजन अपनी तपस्या द्वारा उसे जो पुण्य प्रदान करते है वह अक्षम हो जाता है।

लोकहित की भावना तथा राजा के कर्त्तव्य को अभिज्ञान शाकुन्तलम् में बड़े मार्मिक रूप में अभिव्यक्त किया गया है शाकुन्तलम् के ऋषि कुमार राजा को देख कर कहते है कि यह राजा भी मुनि ही है मुनि आश्रम में निवास करते है तो यह गृहस्थ आश्रम में प्रतिष्ठित है। मुनि तप करते है तो यह प्रजा की रक्षा का तप करता है मुनियों का यश स्वर्ग तक फैला हुआ है इनका यश भी। केवल अन्तर यही है कि यह केवल ऋषि नहीं राजर्षि है।

शाकुन्तलम् नाटक में भी कालिदास ने भारतीय गृहणी के आदर्श और माहात्म को स्थापित किया है।

अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाटक में जीवन दर्शन का समग्र विकास तथा अपने समय के जीवन और समाज की व्याख्या देखी जा सकती है।

अभिज्ञान शाकुन्तलम् में प्रेम शारीरिक आकर्षण से आरम्भ हो कर भी तप और जीवन मूल्यों से जुड कर महनीय बन जाता है। कालिदास ने स्वीकार किया जो प्रेम तपस्वी की तपस्या भंग करने के लिए गृहस्थ के घर में उसके सांसारिक धर्म की परास्त करने के लिए उत्पन्न होता है वह आंधी की भाँति अन्य को नष्ट करके अपने विनाश को भी अपने साथ लिए आता है।

भारतीय जीवन दर्शन और आर्दशों को निरूपित करने वाली एक महान कृति है। राजा का आदर्श ऋषि कण्व, भारीय के वचनों में प्रतिफलित उदात्त मूल्य बोधक सांस्कृतिक वैभव के परिचायक है। भावनाओं व मनुष्यों के मन की कोमल अनुभूतियों का जो संसार है वह संस्कृत साहित्य की अनुपम निधि है। पिता के हृदय की वेदना तथा सारे पर्यावरण का मनुष्य के साथ एकात्म्य का अद्वितीय अनुभव दिखता है। पिता के हृदय की वेदना –

यस्यत्मद्य शकुन्तलेति

आज शकुन्तला चली जायेगी। इस कारण से हृदय उत्कंठा से छू लिया गया है। गला रोके गये आँसूओं के धार के कारण भर्राया है। वे कहते है वन में रहने वाले हम लोगों की यह स्थिति है तो गृहस्थों की क्या होगी शकुन्तला को कण्व द्वारा दिया गया आर्शीवाद अर्थ की गम्भीरता अप्रतिम ही है जिस तरह शर्मिष्ठा ने ययाति को पाया उसी तरह तू भी पति की ऐसी प्यारी बनो।

संदर्भ ग्रन्थ

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
2. अभिज्ञान शाकुन्तलम्– महाकवि कालिदास
3. किरातार्जुनीयम् – महाकवि भारवि।